मध्यस्थ दर्शन अनुरूप शिक्षा विधि तथा सामाजिक परम्पराओ की जाँच

अंतिम रिपोर्ट

शोधकर्ता :**अर्चिता झाला**

मार्गदर्शक : **जिगर रत्नोत्तर**

दिनांक **: १५/०९/२०२२**

Performed under IKS Internship programme.

CERTIFICATION BY THE INTERN

I declare that this report represents my ideas in my own words and where others' ideas or words have been included, I have adequately cited and referenced the original sources. I declare that I have properly and accurately acknowledged all sources used in the production of this report. I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will be a cause for disciplinary action by the IKS Division and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed. I hereby declare that the details given above are true to the best of my Knowledge".

SIGNATURE OF THE INTERN

CERTIFICATION BY THE MENTOR

I hereby certify that the above report is true and the work was performed under my mentorship.

SIGNATURE OF THE MENTOR

अनुक्रमणिका

क्रमिक संख्या	विषय
१	सार
२	कार्यपालक सारांश
३	परिचय
४	पार्श्वभूमी/औचित्य
५	परियोजन का विवरण
६	प्रक्रिया
७	परिणाम
८	चर्चा
९	निष्कर्ष
१०	कृतज्ञता
११	सन्दर्भ

सार :

ए. नागराज जी , लिखित मध्यस्थ दर्शन अनुसार आज हम जो सामाजिक तकलीफे तथा परेशानियों का शिकार हो रहे हैं वह कही न कही हमारी शिक्षा विधि को अधुरा प्रदर्शित करता हैं | हमारी इसी शिक्षा विधि के पूर्ण न साबित होने पे हमे एक बेहतर शिक्षा विधि अपने और आने वाले युग की ज़रुरत को पूर्ण करने के लिए अनिवार्य साबित होती हैं | यही शिक्षा विधि से पसार हुए विद्यार्थी गण जब सामाजिक स्तर पर मुसीबतों या तनाव का शिकार बनते हैं तब हमे एक बेहतर शिक्षा विधियों की ज़रुरत महसूस होती हैं | तभी मध्यस्थ दर्शन हमे इस दिशा में पथ प्रदर्शित करता हैं तथा मेरा यह परियोजन अनिवार्य साबित होता हैं | मध्यस्थ दर्शन एक बेहतर शिक्षा विधि केसे बनाई जाए तथा उसके अनिवार्य गुणों का वर्णन स्पष्ट रूप में हमारे सामने रखता हैं | शिक्षा विधि कैसी हो तथा उसमे कोनसे विषय ज़रूरी बनते हैं यह बताया गया हैं | मध्यस्थ दर्शन में शिक्षा को लेके काफी परिभाषा तथा उनका सार स्पष्ट रूप से किया गया हैं तथा शिक्षा और सामाजिक परम्पराओ की अनातार्संयोज्ञात्मकता पर विशेष माहिती प्रदान की गयी हैं | इन परिभाशाओ का असल जीवन में उपयोग और सार्थकता भी स्पष्ट रूप में दर्शाई गयी हैं , और इसी वजह से यह परियोजन द्वारा मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन अनिवार्य साबित होता हैं | मध्यस्थ दर्शन में लिखित सारे शिक्षा और समाज अनुरूप परिभाषा और असल में उसका प्रयोजन तथा मानवता पूर्ण आचरण शिक्षा विधि से स्थापित करना और एक बेहतर समाज के स्थापन की और का यह परियोजन मदद रूप बनेगा |

मानवीय परांपरा में जागृत मानव हि शिक्षा प्रदान करने में समक्ष है .शिक्षा का प्रयोजन है, अखंद्सामाजिकता का सूत्र एवं व्याख्या समाधान, समृवद्ध, अर्भय सह-अस्तित्व इस .विधि से समाज अखंडता और सार्वभौमता के रूप में वयभावित होता है. उपररिर्णशत धमशनैवतक तथा राज्यनैवतक व्यिस्था के वलए जो मानिीयतापूणश द्दवष्ट, सार्वभौमता तथा विषयों को व्यिहार में आचररत करने योग्य अवसर और साधन प्रस्तुत हो सके तथा रूचि उत्पन्न कर सके शिक्षा निति हैं।

ABSTRACT(Translation In English):

Madhyasth darshan, written by A. Nagraj consists the solutions related to our non-sustainable educat|on system and how it has failed in developing a society which is holistic and humane. Madhyasth Darshan therefore, suggest a better education system for us and to fulfill all the needs of our upcoming generations. While getting graduated from the present education flow the students of now are vulnerable and victims of poor societal arrangements and lack of practical education is a major drawback. Here, Madhyasth darshan suggests us ways to make a better education system and how it would work and what all core subjects should be or |n which ways it should be taught is suggested by this Darshan. The Darshan has many definitions and their summaries and also the information on interconnectedness of education and society is uniquely described |n it. The real life implementations of these definitions is also provided in their and this project becomes necessary and practical. This project would be useful by describing all the aspects of education and society as

per Madhyasth Darshan and would somewhere help in making of a holistic and fulfilling education system.

Also the book states that only a *jagrut Manav* would be able to give thorough knowledge and real education. The real purpose of education is indivisible Society and everything leading to the formation of indivisible society.

कार्यपालक सारांश :

मध्यस्थ दर्शन में दर्शाए हुए कुछ मुद्दे की जो आज की शिक्षा निति तथा उसके मानवीयकरण की आवश्यकता हमे महसूस कराती हैं तब निम्नलिखित मुद्दे की हमे जाँच होना अनिवार्य बन जाता हैं।

प्रत्येक मानव का सहज प्रवृतन वातावरण , अध्ययन एवं सांस्कार के योगफल के रूप में प्रत्यक्ष है। प्रकृति एवं मनुष्य कृ त र्भेद से वातावरण प्रवसद्ध है। विक्षा एिां व्यिस्था ही मानिकृत वातावरण का प्रत्यक्ष रूप है। मानि मात्र का सांस्कार ''अन्वेशषणत्रय-'' (विषयान्देषण, ऐषणान्द्र, सत्यान्द्षणकी (सीमा में स्पष्ट है। प्राकृतिक वातावरण की गणना प्रत्येक भूवम पर पाये जाने खनिज –वनस्पति ही का सांतुलन सवहत मानिर्त्र तीनों अिस्थाएँ सांबवन्द्धत रहता है। प्रत्येक भूवम पर जो प्राकृ वतक वातावरण विशमान है यही उस भूवम में पाये जाने िालेखवनज एिां िनस्पवत की रावि पर आधाररत है। यह उस भूवम के विकास पर आधाररत है। ककसी र्भी भूवम पर ज्ञानाि्स्था के मानि की अिवस्थवत घटना के पूि्श ही जीि ि िनस्पवतयों का समृद्ध होना अवनियश है। इसके पूि्श जल का होना आिश्यक है। प्रत्येक भूवम पर ककसी अवधकतमउष्ण और िषाश मान -न्द्यूनतम िीत- -की सीमा में ही जीि एिां मानि अपने जीिनी क्रम और जीिन के कायशक्रम को सम्पन्न करने में समथश हुए हैं। प्राकृ वतक िातािरण का सांतुलन र्भी मनुष्य सहज जागृवत के वलए सहयोगी है, इसवलए - सांतुलन के वलये आधार आिश्यक है। अिेष प्रकृ वत का सांतुलनाधार सर्त्ा ही है, जो पूणश है। प्रत्येक कक्रया के सांतुलन का आधार वनयम है, जो पूणश है। प्रत्येक व्यिहार के सांतुलन का आधार न्याय है,जो पूणश है। प्रत्येक विचार के सांतुलन का आधार समाधान है, जो पूणश है। प्रत्येक व्यवि में अनुर्भि का आधार सहआवस्तत्ि रूपी परम सत्य है-, जो समग्र है। प्राकृ वतक एिां मानि सांतुलन एिां असांतुलन का प्रधान कारण मानि ही है, र्भ्रमत अिस्था में मानि कमश करते समय स्ितांत्र एिां फल र्भोगते समय परतांत्र है। जागृत मानि कमश करते समय तथा फल र्भोगते समय स्ितांत्र है। जागृत अिस्था में समझकर करने िाली परम्परा रहेगी तथा र्भ्रमत अिस्था में कर के समझने िाली परम्परा रहेगी। प्राकृ वतक िैर्भि का विििेषकर मनुष्य ही उपयोग करता है जो प्रत्यक्ष है। इसवलए - ऋतुसा-ंतुलन को बनाये रखने के वलये भूवम में आिश्यकीय मात्रा में खवनज िनस्पवत को सुरवक्षत रखते हुए (िन) उपयोग करना, साथ ही उसकी उत्पादनप्रकक्रया में विघ्न - उत्पन्न नहीं करना और सहायक होना ही प्राकृ वतक वनयम का तात्पयश है। यह पूणशतमानि का : दावयत्ि है। िनस्पवत ि)नएिां खवनज वजनकी उत्पवर्त् की सांर्भािना ए (िां क्रम स्पष्ट हैं।

समग्रता के प्रवत वनर्भ्रमता को प्रदान करने, जागृवत की कदिा तथा क्रम को स्पष्ट करने, मानवीय मूल्यों को सारव र्भौवमक रूप में वनधाशररत करने, मानीयता से अवतमानीयता के वलये समुवचत विक्षा प्रदान करने योग्यक्षमता सम्पन्न-शास्त्र तथा शिक्षा प्रणाली ही शांति एवं वस्थरतापूणश जीना को प्रत्येक स्तर में प्रस्थावपत करनेमें समथश है। इसके वबना मानव जीवन में स्थिरता एवं शांति संभव नहीं है, जो स्पष्ट हैं।

EXECUTIVE SUMMARY(Translation In English):-

As been mentioned in Madhyasth Darshan, the need of changes in today's education purpose and hence addition of humane behavioural aspect is something we must look forward to and hence some of the highlighted points are discussed as below.

The instinctive nature of every human is evident as a result of environment, study and culture. The environment is known for its distinctness between man and nature. Education and system is the direct form of humanized environment. Calculation of the natural environment including the balance of winter-warm and rainfall values found on each land. The constellation is related to all the three states. The natural environment present on each land is the amount of minerals and flora found in that land is based on the development of that land. It is necessary for life and flora to prosper before any event of the occurrence of knowledge of human being on any Earth. It is necessary to have water before it. The balance of natural environment is also helpful for human spontaneous awakening , so-basis is necessary for development.

The balance of the rest of the nature is truth, which is complete.

The basis of the balance of every action is the rule, which is complete.

The basis of the balance of every behaviour is justice, which is perfect.

The basis of every thought is the solution, which is complete.

The basis of experience in every individual is the absolute. Truth of co-existence , which is total.

The main reason for the natural and human balance and imbalance is the human itself, while doing human being in the state of confusion. There is freedom and freedom while enjoying the fruits. Awakened man is free while doing the business and enjoying the fruits. In this state, there will be a tradition of doing by understanding and in the confused state, there will be a tradition of understanding by doing . especially humans use natural beauty which is direct.

Preserving the required amount of flora in the land to maintain the seasonal balance to use, as well as not to disturb the its production process and to be helpful is the natural law is meant to be. It is completely the responsibility of the human being. The probability of sequence of origin of plant and mineral is clear, their expenditure in

proportion to them . It is fair, otherwise it is nature to fall into trap of natural accidents.

To impart to inclusiveness, to clarify the direction and order of awakening, to inculcate human values. To determine universally, from standard to sub-standard, to provide appropriate education and education system itself is capable of establishing a peaceful and stable life at each level is complete. Without this, stability and freedom in human life is not possible , which is obvious.

परिचय:

मध्यस्थ दर्शन हमारे सामने एक बेहतर शिक्षण तथा दुसरे शब्दों में एक पूर्ण शिक्षा का स्वरुप का प्रस्ताव रखता हैं | मध्यस्थ दर्शन एक अखंड समाज सार्वभोम व्यवस्था की बात करता हैं जिसके सन्दर्भ में विधि को पहचानने के मुख्य रूप में पाँच मुद्दे पाए गए हैं, (१) मानवीय शिक्षा संस्कार (२) न्याय – सुरक्षा , (३) उत्पादन कार्य , (४) विनिमय कोष, (५) स्वास्थय-संयम | इन पांचो मुद्दों का होना ही सार्वभोम व्यस्वस्था का स्थापन कर सकता हैं | इनमे से हमारे परियोजन का मुख्या मुद्दा जो के शिक्षा और सामाजिकता हैं , मध्यस्थ दर्शन अनुसार , मानवीय शिक्षा संस्कार की सफलता अर्थ-बोध होने के रूप में हैं | मध्यस्थ दर्शन के अनुरूप , मानव परंपरा में जागृत मानव ही शिक्षा प्रदान करने में समर्थ हैं | शिक्षा का प्रयोजन हैं, अखंड सामाजिकता का सूत्र एवं व्याख्या समाधान, समृद्धि ,अभय और सह-अस्तित्व. इस विधि मात्र से समाज अखंड और सार्वभौमता के रूप में वैभावित होता हैं | दर्शन अनुसार शिक्षा निति ऐसी हो जो मानवीयतापूर्ण द्रष्टि, स्वाभाव तथा विषयों को व्यव्हार में आचरित करने योग्य अवसर और साधन प्रस्तुत कर सके |इस दर्शन अनुसार अध्ययन अथवा शिक्षा को सफल बनाने का दायित्व अध्यापक, अध्यापन, तथा शिक्षा-वस्तु और प्रणाली पार हैं, क्योकि यह चारो मिलकर ही परस्पर पूरक साबित होते हैं , इनमे से एक भी न होने पर शिक्षा तथा अध्ययन का अधुरा होना साबित होता हैं , यही मुद्दा हम हमारी उपस्थित शिक्षण विधियों में नहीं देख पते तथा इन चारो में से कुछ मुद्दे कम होने का एहसास करते हैं | विध्यायन पद्धति का विकास तभी संभव हैं जब शिक्षा प्रणाली , अध्यापक, माता-पिता, तथा अध्ययन यह सब एक्सुत्रात्मकता हो, जिसके कारण कृतज्ञता और सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त हो सके | एक पूर्ण शिक्षा प्रणाली के लिए शिक्षा-निति , धर्मं-निति और अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था रुपी राज्य-निति का निर्भ्रम ज्ञान आवश्यक हैं | एक अच्छी और पूर्ण शिक्षा निति का आधार एवं उद्देश्य मानव में मानवीयता तथा सामाजिकता होना बहुत जरूरी हैं | मानवीयता ही सामाजिकता हैं तथा यही सार्वभौम व्यवस्था का स्थापन स्तम्भ हैं और इसीलिए इसके आधारित शिक्षा प्रणाली से मानवीयता संपन नागरिक तथा विद्यार्थी का निर्माण होगा जिनकी सह-अस्तित्व तथा पोषण में द्दढ़ निष्ठा होगी |

अहांकार, ईष्याश, द्वेष और अवर्भमान सवहत व्यवि, कु टुम्ब, समाज, राष्ट्र एिं अन्दतराशष्ट्र की नीवत एिं तदनुकू ल ककये गये कमशउपासना-, व्यिहारव्यिस्था-, प्रचारप्रदिशन एिं विक्षा -प्रयोग- असामावजक वसद्ध हुई है। समाज एिं सामावजकता के वबना मनुष्य जीवन में कोई मूल्य तथा कायशक्रम वसद्ध नहीं होता हैं।

दिशनक्षमता जागृवत पर-; जागृवत, आकंशाए एवं आचरण पर; आकांशा एवं आचरण शिक्षा एवं अध्ययन पर; शिक्षा एवं अध्ययन व्यिस्था पर; व्यिस्था, दिशन क्षमता के आधार पर होना पाया जाता हैं।

प्रत्येक आविष्कार एवं अनुसांधान व्यवि मूलक उद्घाटन है। यह शिक्षा एवं प्रचार के माध्यम से सिश सुलर्भ हो जाता है। यही सिश सामान्धीकरण-प्रक्रिया हैं।

जिसका विभव एवं वैभव है उसी का आविष्कार है क्योंकक उसके पहले उसका स्पष्ट ज्ञान मनुष्य कोरट में था ही नहीं। इसवलए, उस समय में अथाशत सन 2000 से पहले जो समझ मानि समुदायों में रहा उसकी तुलना में मध्यस्थ दिशन आविष्कार, अनुसांधान है। सह-अस्तित्व में, से, के वलए प्रकटन ही आविष्कार है। आविष्कार की सामान्धीकरण प्रकक्रया ही विक्षा यही चेतना विकास मूल्य शिक्षा हैं।

मनुष्य का स-धर्म पालन ही अखंड सार्वभौमता है और सीमा विहीनता है, जो स्वयं में सह-अस्तित्व सामावजकता, समृवद्ध, सांतुलन, वनयांत्रण, सांयमता, अर्भय, निर्विषमता , सरलता एवं उदारता है। इसी में दया, स्नेह, उदारता, गौरि, आदर, वात्सल्य, श्रद्घा, प्रेम, कृ तज्ञता जैसे सामावजक वस्थर मूल्यों का िहन होता है। यही मानि की वचर इच्छा र्भी है। यही स्वस्थ सामावजकता की आद्यान्द्त उपलवब्ध है।

सच्चररत्र पूणश व्यवियों की बाहुल्यता के वलये जागृत मानव का सहयोग व प्रोत्साहन, उनकी समुवचत शिक्षा व सांरक्षण एवं उनके अनुकूल परिस्तिथिया ही विश्व शांति का प्रत्यक्ष रूप है। इसके विपरीत में अशांति है, जो स्पष्ट है। ''व्यिहारत्रय-'' वनयम का पालन ही सच्चररत्रता है। यही मानि की पपांचो वस्थवतयों में प्रत्यक्ष गररमा है। यही सहज वनष्ठा है और इसी में विज्ञान और विवेक पूणशरूपेण चररताथश हुआ है। फलतप्रणाली-पद्धवत एिं विक्षा-स्िस्थ व्यिस्था : प्रभावशील होती है। ''व्यिहारत्रय-'' का तात्पयश जागृत मानि के द्वारा ककया गया कावयक, वाचक, मानवसक व्यिहार से हैं।

सहस्तित्व वादी विचार के अनुसार ज्ञान, विवेक , विज्ञान के अनुसार सिशमानि को मानि लक्ष्य के अथश में विक्षा सांस्कार को अपनाना आिश्यक है। इसमें मानीियता पूणश आचरण मानि लक्ष्य के अथश में स्पष्ट रहना आिश्यक है, क्योंकक सर्भी अिस्था में आचरण के आधार पर ही उन अिस्थाओं का लक्ष्य पूणश हुआ समझ में आता है। जैसे पदाथाशिस्था में सम्पूणश िस्तु पररणाम के आधार पर यथावस्थवत रूपी लक्ष्य का आचरण करता हुआ देखने को वमलता है। इसी प्रकार प्राणाअवस्था और जीवावस्था में र्भी कायशरत सर्भी इकाई उनउन अिस्थाओं के लक्ष्य के अथश में आचरण- करती हुई स्पष्ट है, यथा प्राणाअवस्था अस्तित्व सवहत पुवष्ट के अथश में, बीज से वृक्ष, वृक्ष से बीज तक यात्रा करता हुआ देखने को वमलता है। इसी प्रकार सम्पूणश जीव सांसार, अवस्थिति , पुवष्ट सवहत वंशा नुषांगीय विवध से जीने की आिा में आचरण करता हुआ देखने को वमलता है। इतने सुस्पष्ट वस्थवतयों को देखने के उपरान्द्त यह र्भी आिश्यक रहा कक मानि का आचरण अवस्थाये , पुवष्ट, आिा सवहत सुख को प्रमावणत करने के अथश में होना है वजसके वलए ही मन स्थिति प्रमावणत होना स्वाभाविक रही।

मानि लक्ष्य समाधान -, समृवद्ध, अर्भय, सहस्तित्व को प्रमावणत करने और उस आधार पर जीिन लक्ष्य (मन (स्िस्थता:– प्रमाण ही सुख,शांति , सांतोष, आनन्द को साथशक बनाने के अथश में मानि विक्षा सांस्कार की आिश्यकता सदासदा से बन-ी हुई है। इसकी सफलता ही मानि कुल का सौर्भाग्य हैं।

पार्श्वभूमी/औचित्य:

मध्यस्थ दर्शन का स्थापन सन. १८७५ में हुआ , इस दर्शन की परिभाशाओ को असल ज़िन्दगी में उपयोग करने के कही प्रयास किये गए हैं और कही विद्यालयों में यह दर्शन अनुसार शिक्षा निति अपनाई भी जा रही हैं | पुरे भारत में इस दर्शन के अधर पार कही विद्यालय अपने पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर काफी अच्छा परिणाम प् रहे हैं तथा इस दर्शन के अध्ययन सत्र भी पुरे भारत और कुछ बाहरी देशो में भी हो रहे हैं | अपने इस परियोजन से में इन सब से जुड़कर असल ज़िन्दगी में इस दर्शन की परिभाषा तथा ज्ञान को केसे उतरा जाए तथा आचरण में केसे लाया जाए उसकी पूर्ण जानकारी देने का उद्देश्य रखती हु तथा शिक्षा में मानवीयता पूर्ण आचरण का विवरण परिचित हो सके उसका विवरण भी करना चाहूंगी।

IKS के सन्दर्भ में, यह परियोजन मध्यस्थ दर्शन अनुसार एक पूर्ण शिक्षा विधि तथा निति को स्थापित करने की बात करता हैं की जो एक सार्वभौम और अखंड समाज के स्थापन में मदद रूप बनेगा | अभी की उपस्थित शिक्षा विधिया पूर्ण साबित नहीं हो प् रही तथा समाज भी अखंड स्थापित नहीं हो पा रहा तभी मध्यस्थ दर्शन हमें एक पूर्ण रूप की शिक्षा विधि का प्रस्ताव प्रस्तुत करता हैं | मध्यस्थ दर्शन अनुसार शिक्षा का सबंध अर्थ-बोध से होना चाहिए न की किताबी ज्ञान तथा कक्षा-स्थित विधियों से, शिक्षा निति ऐसी हो जो विद्यार्थी को हर रूप में एक जागृत नागरिक बनाये तथा एक अखंड समाज की स्थापना में वह सब अपना योगदान दे पाए | शिक्षा निति को बेहतर बनाने के सन्दर्भ में अध्यापक को अर्थ-बोध होना भी उतना ही अनिवार्य हैं तथा माता-पिता का अर्थ-बोध होना और अपने बच्चे के मन में अखंड समाज का लक्ष्य स्थापित करना भी अनिवार्य हैं | इन सारी चीजों के अंतर्संयोजनात्मकता से ही एक बेहतर शिक्षा विधि तथा अखंड समाज का स्थापन हो सकता हैं | मेरे इस परियोजन से में दर्शन में मोजूद उन सरे मुद्दों की जो शिक्षा और अखंड समाज से जुड़े हैं उनका अध्ययन कर मेरे रिपोर्ट द्वारा प्रस्तुत करना चाहूंगी तथा जल्द ही एक बेहतर शिक्षा निति स्थापित हो सके उसके प्रयोत्नो में अपना योगदान देना चाहूंगी |

मानि लक्ष्य समाधान -, समृवद्ध, अर्भय, सहस्तित्व को प्रमावणत करने और उस आधार पर जीवन लक्ष्य (मन:स्थिति (– प्रमाण ही सुख, शांति , सांतोष, आनन्द को साथशक बनाने के अथश में मानि विक्षा सांस्कार की आिश्यकता सदा सदा से-बनी हुई है। इसकी सफलता ही मानि कु ल का सौभाग्य हैं ।

मनुष्य को सहस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज विवध से स्वयं व्यिस्था रूप में जीने का सूत्र और व्याख्या स्ियांस्फू तश विवध से समझ आता है।

सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व स्थिर है। सहस्तित्व में ही विकास और जागृवत वनवित है। इस धरती पर हम मानि इस त्य का अध्ययन करने योग्य वस्थवत में हो चुके हैं। सिशुिर्भ का दृष्टा, कर्त्ाश, र्भोिा, उसके मूल में विक्षा सांस्कार से पाई गयी ज्ञान, विज्ञान, विवेक का धारक-वाहक केवल जागृत मानव ही हैं।

परियोजन का विवरण:

ए. नागराज जी लिखित , मध्यस्थ दर्शन का स्थापन सन. १८७५ में हुआ , इस दर्शन की परिभाशाओ को असल ज़िन्दगी में उपयोग करने के कही प्रयास किये गए हैं और कही विद्यालयों में यह दर्शन अनुसार शिक्षा निति अपनाई भी जा रही हैं | पुरे भारत में इस दर्शन के अधर पार कही विद्यालय अपने पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर काफी अच्छा परिणाम प् रहे हैं तथा इस दर्शन के अध्ययन सत्र भी पुरे भारत और कुछ बाहरी देशो में भी हो रहे हैं | अपने इस परियोजन से में इन सब से जुड़कर असल ज़िन्दगी में इस दर्शन की परिभाषा तथा ज्ञान को केसे उतरा जाए तथा आचरण में केसे लाया जाए उसकी पूर्ण जानकारी देने का उद्देश्य रखती हु तथा शिक्षा में मानवीयता पूर्ण आचरण का विवरण परिचित हो सके उसका विवरण भी करना चाहूंगी।

मानवीय परम्परा जागृत होने में वस्थरता, अस्तित्व सहज विवध सेप्रमावणत होता है, सुस्पष्ट होता है। वनियता मानीयता पूणशआचरण विवध सेप्रमावणत होता है, सुस्पष्ट होता है। इसकी अपेक्षा मानि मेंपीढ़ी सेपीढ़ी मेंरहा आया है। इस प्रकार मानि का विकास और जागृवत को प्रमावणत करनेमेंसमथशहोना ही, मानि का उत्थान, ि ैर्भि, राज्य होना पाया जाता है। राज्य का पररर्भाषा र्भी ि ैर्भि ही है। उत्थान का तात्पयशमौवलकता रूपी ऊाँ चाई में पहुाँचनेसेया पहुाँचनेकेक्रम सेहै। ि ैर्भि अपनेस्िरूप मेंपररिार व्यिस्था और विश्व पररिार व्यिस्था ही है। ऐसी व्यिस्था मेंर्भागीदारी मानि का सौर्भाग्य है। इस क्रम मेंअध्ययन, विक्षा सांस्कार केरूप मेंउपलब्ध होतेरहना र्भी व्यिस्था का बुवनयादी ि ैर्भि है। ि ैर्भि ही राज्य और स्िराज्य केरूप मेंसुस्पष्ट होता है। स्िराज्य का मतलब र्भी मानि केि ैर्भि सेही है। यह ि ैर्भि समझदारी पूिशक ही हर मानि मेंपहुाँच पाता है। यह विक्षा पूिशक लोकव्यापीकरण हो पाता है। ऐसी व्यिस्था अपनेआप मेंरोह, विरोह, ि ोषण और युद्घ मुि रहना इसकेस्थान पर समाधान, समृवद्घ, अर्भय, सहअवस्तत्ि पूिशक रहना पाया जाता है। यही सार्वभौम व्यवस्था का तात्पर्य हैं।

शिक्षा की संपूर्ण वास्तु सहस्तित्व रूपी में रासायनिक , र्भौवतक एिं जीिन कक्रया के रूप में ही है। इसमें से, इनके अविर्भाज्य रूप में मानि परम्परा का सम्पूणश कक्रयाकलाप, व्यिहार, सोच विचार, समझ है। समझ के अथश में ही हर मानि का अध्ययन करना होता है। समझ अपने में जानना, मानना, पहचानना, वनिाशह करने के रूप में प्रमावणत होती है। इसी अथश में सम्पूणश अध्ययन साथशक होना पाया जाता है। अवस्तत्ि में सम्पूणश इकाईयााँ, रासायवनक, र्भौवतक एिं जीिन कक्रया के रूप में पररलवक्षत है ही। गठनीील परमाणु से लेकर अणु, अणुरवचत पपांि, प्राणकोषा, िनस्पवत सांसार, जीि सांसार सर्भी स्ियां में व्यिस्था में रहते हुए, अपनेअपने- वनवित आचरण को व्यि करते हुए समझ में आते हैं। ऐसे प्रमाण में से ये धरती सबसे बड़ा प्रमाण है। धरती एक व्यिस्था के रूप में काम करती है। व्यिस्था के रूप में काम करने का प्रमाण ही है, इस धरती पर र्भौवतकरासायवनक-और जीिन कक्रयाकलाप पदाथश, प्राण, जीि और ज्ञान अिस्था के रूप में प्रकावित है। इससे बड़ी गिाही क्या होगी। इस गिाही के आधार पर अथाशत् पदाथश, प्राण, जीि अिस्था के वनवित कायशकलाप के अनुसार, मानि अपने व्यिस्था में होने का र्भरोसा कर सकता है।

मानि जावत आचरण में धमश प्रधान है, जीव् जातीय स्वाभाव प्रधान,वनस्पतीय गुण प्रधान, पदाथश रूप प्रधान है। मानि धमश अपने में सुख के आधार पर समाधान प्रमावणत होना आिश्यक हो चुका है। सिशतोमुखी समाधान पूणश विक्षा सांस्कार ही इसके वलये परम्परा और स्त्रोत है। यही जागृत परम्परा है।

प्रक्रिया:

मध्यस्थ दर्शन अनुरूप ऐसे नागरिको का शिक्षा द्वारा निर्माण हो की जो मानवीय द्रष्टि, प्रवृति व स्वाभाव सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन समजदारी, ईमानदारी,जिम्मेदारी, भागीदारी से अतिमानावियता का मार्ग प्रशस्त कर सके| इसी दिशा में काम करने हेतु इस दर्शन में विविध शिक्षा-निति का उल्लेख किया गया हैं जो निम्न अनुसार हैं:-

१. विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन:- हमारी अभी की शिक्षा व्यवस्था के अनुसार हमने मानव के शारीर को समजने में काफी प्रगति की हैं तथा शारीर का पूर्ण अध्ययन आज इन ही नीतिओ के करण संभव हैं, परन्तु शारीर से जुडती एक अत्यंत जरूरी वास्तु , चैतन्य इकाई , इसका अध्ययन हमे बोहोत काम दिखाई पड़ता हैं तथा अज की शिक्षा व्यवस्था में जो हमे कमिय नजर आ रही हैं वह कही न कही इस पक्ष के काम अध्ययन होने से ही जुडती हैं| इसलिए विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन भी अनिवार्य होना साबित होता हैं |
२. मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन:- आज पूरी दुनिया में जब मानसिक तनाव और बिमारिय बढती नज़र आ रही हैं तब हमने मनोविज्ञान के अध्ययन में भी काफी गहराई पाई हैं , लेकिन इस समस्या का पूर्ण रूप से निकल तथा दवाई अभी तक नहीं मिल पाई हैं तभी इस दर्शन में संस्कार पक्ष का अध्ययन भी उतना ही जरूरी बने उसका विवरण किया गया हैं , मनोविज्ञान तथा संस्कार पक्ष दोनों के एकसूत्र अध्ययन से ही इस पक्ष को हम पूर्ण रूप से समाज पाएंगे|
३. समाजशास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति तथा सभ्यता का अध्ययन :- आज की शिक्षा व्यवस्था के अनुसार जब हम समाज की व्यवस्था को सिर्फ पुस्तक तथा किताबी ज्ञान के रूप में पढ़ते हैं तभी हमे उनके असल ज़िन्दगी में अपना न सकने की कमी महसूस होती हैं , इस दर्शन के अनुसार समाजशास्त्र के साथ साथ एक मानवीयता पूर्ण समाज व्यवस्था कैसी हो तथा उसके द्वारा एक अखंड समाज की स्थापना कैसे की जाए उसका भी अध्ययन हो यह जरूरी बन जाता हैं |
४. मानिीयता में ही अथश का सदुपयोग एिं सुरक्षा वसद्घ होती है।
५. मानिीयता जागृत मानि परांपरा में ही प्रमावणत होता है।
६. जागृत मानि सामावजक न्द्यावयक इकाई है।
७. सामावजक मूल्य में, से, के वलए विष्टता एवं सुरक्षा सिद्ध की प्रयुवि सफल है।
८. . मानव में स्वाभाव सहज अवर्भव्यवि, धमश सम्पन्नता अनुर्भूवत प्रवसद्घ है।

समाधानात्मक र्भौवतकिाद की चररताथशता आिश्यकता से अवधक उत्पादन है, जो अथश के सदुपयोग एिं सुरक्षा के रूप में मानिीयता में दृष्टव्य है। यही मानि की वचरकामना है-, वजसका पालन पांचो वस्थवतयों में, मानिीयता पू◌िशक होता है। अमानिीयता में इसकी अिहेलना होती है, अवतमानिीयता पू◌िशक स्◌िर्भा◌ितचररताथश होती है। चररताथशता ही : मानि का अर्भीष्ट है। आिा, आिश्यकता तथा अवनियशता पू◌िशक ककया गया प्रयास ही अर्भीष्ट है, इससे विहीन कायशकलाप मानि में सफल नहीं होता है। अवस्तत्◌ि में जागृवतपू◌िशक मानि स्पष्टावधकार सम्पन्न एिं क्षमता को स्पष्ट करता है, जो एकसूत्रता, सा◌िशर्भौमता है। सामावजक मूल्य अनुर्भि में, विष्ट मूल्य व्यिहार में एिं र्भौवतक मूल्य उत्पादन उपयोवगता में स्पष्ट है ।व्यव्हार एवं अनुभव वनर्◌िशरोवधता ही समाधान है।

यही समाधानात्मक भौंवतकिाद को स्पष्ट करता है क्योंकक व्यिहार का आधार अनुर्भि है तथा उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनीलता एिां वितरण का आधार समाधान है। यही समाज एिां सामावजकता है। उपयोवगतामूल्य आिश्यकता में-, आिश्यकतामूल्य विष्टता में-, विष्टतामूल्य स्थावपत मूल्य में-, स्थावपत मूल्य मानि मूल्य में, मानि मूल्य जीिन मूल्य में समर्पशत पाये जाते हैं। स्थावपत मूल्य ही जीवन एवं जीना के कायशक्रम का आधार है, इसी आधार पर सांपूणश विक्षा व्यिस्था हैं न कक केिल उत्पादन पर क्योंकक उत्पादन मानि के अधीन है न कक उत्पादन के अधीन मानि। सांबांध ि स्थावपत मूल्य के िल अखण्ि समाज के अथश में है, अखण्ि समाज सहअवस्तत्ि में अनुर्भि का -फलन है जो के िल अनुर्भि प्रमाण से तथा उत्पादनमूल्य प्रयोग प्रमाण से प्रमावणत है। - जड़-चैतन्द्यात्मक इकाईयों की वस्थवत गवत के िल मूल्यों में, से, के वलए ही है। सर्भी अिस्था और पद में प्रवतवष्ठत इकाईयों का मूल्य उनउन के स्िर्भाि और आचरण के आधार पर गण्य है।- मानि में जो मूल्यक्षमता है-दिशन-, िही मानि को व्यिहार, उत्पादन, विचार एिां अनुर्भूवत में, से, के वलए प्रेररत करती है। यही सामावजकता एिां बौवद्घकता का आधार है। मानि सामावजक, न्द्यावयक इकाई एिां बुवद्घपूिशक, समझदारी पूिशक जीने िाला अथाशत् विििेक विज्ञान पूिशक जीने िाला से र्भी सांबोवधत है, इस सांबोधन का अर्भीष्ट र्भी इसी क्षमता का वनदेिि करता है। यह सांबोधन अनुर्भि बोध पूिशक चारों आयामों में प्रमावणत होने से साथशक है। अखण्ि समाज दि सोपानीय व्यिस्था है यही जागृत मानि परम्परा सहज वैभव हैं।

समाज का प्राथवमक रूप समझदार :परिवार

समाज का वद्वतीय रूप :अखंड समाज (राष्ट्र)

समाज का तृतीय रूप :पृथ्वी अखंड समाज

सार्वभौम व्यवस्था :

''सर्भी राज्य सांस्थाएां अखंड समाज के अथश में है।'' पररिार र्भी अखण्ि समाज के अथश में प्राथवमक एक घटक है। इस वस्थवत में मुख्यतअवस्तत्ि प्रमावणत-सह : होता है। ऐसे अनेक पररिार वमलकर साििशर्भौम व्यिस्था में र्भागीदारी करते है। ऐसी र्भागीदारी स्ियां राज्य सांस्थाओं के रूप में गण्य होता है। इसी क्रम में अथाशत् समग्र व्यिस्था में र्भागीदारी करने के क्रम में विश्व पररिार सर्भा पयशन्द्त र्भागीदारी सम्पन्न होती है।

मानव में अनुभव बोध सम्पन्नता ही प्रबुद्घता है। यही विक्षा व्यिस्था का आद्यान्द्त लक्ष्य है जो कारण, सूक्ष्म, स्थूल तत्वों का अध्ययन है। वजसमें ज्ञान, विवेक , विज्ञान पूर्वक अखंड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित होती है।

दश सोपानीय व्यिस्था सहज चारों आयामों की एकसूत्रता ही अखंड समाज है वजसकी प्रर्भुसत्त्ा सांज्ञा है। यह सह-अस्तित्व सहज सम्पूणश मूल्यों का प्रमाण एिां परांपरा ही है। सम्पूणश मानि में प्रबुद्घता का ही परािर्तशतत रूप प्रर्भुसत्त्ा है जो मानिीयतापूणश विक्षा व्यिस्था, विवध, नीवत पूर्वक सफल है।

नियम , न्याय , धर्म एवं सत्य देश कालातीत हैं, अतसाििशर्भौवमक हैं। इसवलए साििशर्भौवमकता : ही अप्रवतमता, अप्रवतमता ही मध्यस्थता, मध्यस्थता ही प्रबुद्घता, प्रबुद्घता ही विज्ञान व विवेक , विज्ञान विवेक ही सम्प्रर्भुता, सम्प्रर्भुता ही अखंडता , अखंड सामाजिकता ही समाधान एिां समृवद्घ,

समाधान एिं समृवद्घ ही सह-अस्तित्व , सह-अस्तित्व ही जीवन एवं जीवन ही वनयम, न्याय, धमश एवं सत्य है। मानव जीवन कायशक्रम में विवध, नीवत एिं व्यिस्था का समावहत रहना प्रसिद्ध है।

सार्वभौमिकता ही निर्विवाद एवं समाधान है।

ज्ञानावस्था की इकाई में वनर्िशाद की आि आकांशा है। साथ ही उसमें पूणशता के वलये प्रयास भी साम्यतपाया : जाता है। इसकी अपयाशप्तता ही है, जो प्रभुसत्ता में, से, के वलये विविधता है। यही रोह, विरोह, आतांक तथा युद्घ है, जबकक यह सब मानि की वांछित घटना (आवित), वस्थवत या पररवस्थवत नहीं है।

समृद्धि , समाधान, अभय एवं सह-अस्तित्व ही मानव कुल की सार्वभौमिक आकांशा है।

प्रभुसत्ता की प्रवतष्ठा तबतक पररपूणश नहीं है जब तक अर्भयता को प्रदान करने में समथश न हो - जाए।

प्रभुसत्ता ही अर्भयता, अर्भयता ही क्रम,क्रम ही जागृवत, जागृवत ही अवनियशता, अवनियशता ही प्रबुद्घता, प्रबुद्घता ही जीिन सफलता और जीिन सफलता ही प्रभुसत्ता है।

मानवीयता से ही प्रर्भुसर्त्ा की प्रवतष्ठा एवं उसकी अक्षुण्णता है।

वर्ग विहीन अखंड समाज ही प्रबुद्घता का प्रमाण रूप है।

प्रत्येक मानव में पाये जाने वाले अनुर्भि के लिए कारण, विचार के वलये सूक्ष्म, व्यिहार के वलये सूक्ष्म-स्थूल तथा उत्पादन के वलये स्थूल त्यों का अध्ययन है, जो प्रत्यक्ष है। अध्ययन से ि ैचाररक वनयांत्रण, विक्षा से व्यिहाररक वनयांत्रण एिं प्रविक्षण से उत्पादन में वनयांत्रण प्रवसद्घ है। ि ैचाररक वनयांत्रण ही प्रधान उपलवब्ध है, यही वैचारिक पररमाजशन सांस्कार एिं गुणात्मक पररिशतन है। व्यिहार ि उत्पादन के वलए विचार ही आधार है। विचार ही सामावजक एिं असामावजक है। अध्ययन की चररताथशता ही स्ियां में, से, के वलए स्पष्ट होना है। यही चैतन्य कक्रया एिं कक्रयाकलाप ही है, यही बौवद्घक अध्ययन है। ''वनयमत्रय'' सम्पन्न विचार ही व्यिहार में सामावजक तथा उत्पादन में सफल हैं। न्यायपूणश जीिन ही सामावजकता का प्रत्यक्ष रूप है। सांबांधों में वनवहत स्थावपत मूल्यों का वनिाशह ही न्यायपूणश व्यिहार है। न्यायपूणश विचार ही प्रबुद्घता के रूप में है। न्यायपूणश जीिन ही सांयत जीिन है, यही अपव्यय एवं र्भय से मुवि है। अपव्यय एवं भय में सामावजकता नहीं है।

सबंध और मूल्य:

प्रत्येक सबंध में स्थावपत एवं विष्ट मूल्य स्पष्ट व प्रमाणित हैं। जैसे-:

1. माता-पिता के प्रवत विश्वास निर्वाह –निरन्तरता गौरि = , कृ तज्ञता, प्रेम, सरलता, सौम्यता, अन्यता – भावपूर्वक वास्तु व सेवा के समपशण रूप में है।
2. पुत्रममता = वनरांतरता-पुत्री के प्रवत विश्वास वनिाशह-, ि ात्सल्य, प्रेम, सहजता, अन्यता-भावपूर्वक वास्तु व सेवा के समर्पण रूप में है।
3. र्भाईसम्मान = वनरांतरता-वनिाशह-बहन की परस्परता में विश्वास-, गौरि, कृ तज्ञता, प्रेम, सौहरशता, सरलता, सौजन्यता, स्नेह, अनन्यता-भावपूर्वक वास्तु व सेवा अर्पण के रूप में है।
4. गुरुविष्य के- प्रवत विश्वासप्रेम = वनरांतरता-वनिाशह-, वात्सल्य , ममता, अनन्यता, सहजता, भावपूर्वक प्रबोधन जिज्ञासा पूर्ति सहित वास्तु व सेवा-समर्पण के रूप में है।

5. विष्यगौरि=वनरांतरता-वनिाशह-गुरु के प्रवत विश्वास-, कृ तज्ञता, प्रेम, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता - भावपूर्वक वजज्ञासा सहित वस्तु समपशण के रूप में है।-
6. पति स्नेह = वनरांतरता-पत्नी की परस्परता में विश्वास वनिाशह-, गौरि, सम्मान, प्रेम, वनष्ठा, सौहरशता, अनान्यतापुर्वक सद्चररत्रता सवहत वस्तु एवं सेवा अपशण के रूप में है।
7. साथी सहयोगी के प्रवत-विश्वासस्नेह = (व्यिस्था तांत्र में) वनरांतरता-वनिाशह-, सौजन्यता, निष्ठापूर्वक वास्तु व सेवा प्रदान के रूप में है।
8. सहयोगीगौरि = (व्यिस्था तांत्र में) वनरांतरता-वनिाशह-साथी के प्रवत विश्वास-, सम्मान, कृ तज्ञता, सौहरशता, सौम्यता, सरलता, भावपूर्वक सेवा समर्पण के रूप में है।
9. मित्र की परस्परता में विश्वास वनिाशह, वनरांतरता स्नेह =, प्रेम, सम्मान, वनष्ठा, अनन्यता, सौहरशता भावपूर्वक वस्तु व सेवा समर्पण के रूप में है।
10. व्यवस्था के प्रति भागीदारी का विश्वास वनिाशह, वनरांतरता मानिीयतापूणश आचरण =, व्यव्हार उत्पादनपूर्वक आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

प्रेम पूणश मूल्य है

प्रेम अन्य आठों मूल्यों के रूप में प्रकारान्दतर से है, क्योंकक प्रत्येक स्थावपत मूल्य प्रेम से सांबांवधत है, जो अनुर्भि पूिशक वसद्घ है। यही प्रमाण है।

''सत्य ही प्रेम, प्रेम ही पूणश, पूणश ही अनुर्भि, अनुर्भि ही सत्य है। इसवलए पूणश मूल्य में स्थावपत मूल्य, स्थावपत मूल्य में विष्ट मूल्य एिां विष्ट मूल्य में उत्पादन मूल्य समर्पित है।''

गुरु मूल्य में लघु मूल्य समाया हुआ हैं

इसवलये जागृवत विकास के क्रम में गुणात्मक प्रगवत है। इसी क्रम में चैतन्य प्रकृ वत है। इसके गुणात्मक पररिशतन के फलस्वरुप ही निर्भ्रम्वस्था र्भी प्रवसद्घ है। यही वनर्भ्रम अिस्था पूणश मूल्यानुर्भूवत योग्य क्षमता है, इसवलये गुणात्मक पररिशतन के वलये चैतन्य प्रकृ वत प्रिृत्त् है।

परिणाम:

उपर्युक्त लिखित दर्शन द्वारा जो शिक्षण-निति अपनाने की बात की गयी हैं उनसे हमारी आजकी शिक्षण व्यवस्था की मुकाबले काफी ओअग परिणाम और व्यवस्था का रथ में कही कार्य देखने को मिलेंगे| इस शिक्षा निति के चलते विद्यार्थी सह-अस्तित्व तथा मानवीयता पूर्ण आचरण का पूरा अध्ययन कर पाएंगे तथा मात्र किताबी ज्ञान न प्राप्त कर वह अपने आचरण में भी मानवीय तथा संग्यांशिलता का स्थापन कर पाएंगे| दर्शन द्वारा शिक्षा निति के चलते मानवीय द्रस्ती तथा अतिमंवियता का मार्ग प्रशस्त करते नागरिको का निर्माण हो पायेगा| इस शिक्षा निति के रहते एक अखन समाज , सार्वभौम व्यवस्था का निर्माण संभव हो सकेगा जो हमारी अभी की सारी कठिनाई और तनाव से मुक्त समाज की उत्पति करेगा| इस शिक्षा निति के फल स्वरुप विद्यार्थियों में शिक्षा को लेकर एक अलग जिज्ञासा उत्पन हो पाएंगी तथा उनके पूर्ण शारीरिक तथा चैतन्य केन्द्रित विकास में उनकी पूर्ण रूप से सहायता तथा

मार्गदर्शन कर पायेगी| इस शिक्षा निति अनुसार अध्यापक तथा माता – पिता का भी उतनि ही भागीदारी रहेगी जितनी की बच्चो की और इसी वजह से अध्यापक और माता-पिता का पूर्ण रूप से अध्ययन अनिवार्य बनेगा| इस निति के चलते मानवीयता को प्रधान माना जायेगा| इस निति के रहते असल ज़िन्दगी में जो अनिवार्य हैं तथा एक बेहतर समाज के निर्माण में उपयोगी हो सके उन सारी चीजों का समावेश होगा तथा कार्य विधिओ का अध्ययन भी ज़रूरी बनेगा जिससे विद्यार्थी कार्य क्षेत्र का अध्ययन पूर्ण कर सके |

मध्यस्थ दर्शन अनुसार यह विकल्प अखंड समाज , सार्वभौम व्यवस्था के रूप में हैं , तथा इस प्रस्ताव में मानव ही अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण देना प्रतिपादित हैं | इसके साथ ही मानव प्रमाण होने का साक्षी को भी संजो लिया हैं, और सर्वमानव का इस मुद्दे पार ध्यान आकर्षण करने की अनिवार्यता भी दर्शायी गयी हैं | इस तरह एक क्रम की इत्पति होती हैं जो कुछ इस अनुसार हैं – समुदाय चेतना से मानव चेतना, मानव चेतना से समाज चेतना और इस श्रुंखला का परिवर्तित होना ही महत्वपूर्ण घटना हैं |

मानव मानीयता के अथश में ही गुणात्मक एकता के वलए तृवषत है। अस्तु, न्द्याय का ध्रुिीकरण उसी सीमा में है। ''मानि न्द्याय का याचक है।'' इसवलए सांज्ञानिील ही एकता के वलये कदिा है, जो बोध, सांबोध, प्रबोधक्षमता के रूप- में प्रत्यक्ष है। साथ ही यही अवग्रमता का कारण है एिां गुणात्मक पररिशतन पूिशक सतकशता तथा सजगता के रूप में स्पष्ट है। सांचेतनिील क्षमता ही अनुर्भि में परमानन्द्द प्रवतष्ठा, विचार में समाधान प्रवतष्ठा, व्यिहार में प्रेम प्रवतष्ठा है। इस प्रवतष्ठात्रय के वलये मानि अनिरत वपपासु रहा है। ''प्रवतष्ठात्रय ही मानि प्रकृ वत का लक्ष्य है।'' िादत्रय का भी अर्भीष्ट यही है। इसवलए लक्ष्य की अपेक्षा में ही सहीगलत-, उवचतअनुवचत-, विवधवनषेध-, पापपुण्य का वनधाशरण - होता है। वनयम से ही सुख ि दुख:, जागृवत ि ह्रास दृष्टव्य है। अनुर्भिात्मक अध्यात्मिाद का लक्ष्य परमानन्द्द प्रवतष्ठा, समाधानात्मक र्भौवतकिाद का लक्ष्य समाधान प्रवतष्ठा एिां व्यिहारात्मक जनिाद का लक्ष्य न्द्याय और प्रेम प्रवतष्ठा सूत्र है। यही लक्ष्यत्रय के िल सांज्ञानिीलता की गररमा है। यही इसकी क्षमता, योग्यता, पात्रता में गुणात्मक पररितशन का मूल कारण है।

चर्चा:-

उपर्युक्त प्रक्रिया तथा उनके परिणामो का उल्लेखन करने के बाद इस परियोजन का महत्व सर्जित होता हैं| इन सारी प्रक्रिया के परिणामो से हमे इस परियोजन का शीर्षक जो की हैं “मध्यस्थ दर्शन के अनुरूप शिक्षा विधि तथा सामजिक परंपराओ की जाँच “ यह पूर्ण तः महोत्तम बनता हैं | इस दर्शन में समायी सारी निति तथा परिभाशाओ से हमे अज के युग की जो शिक्षा और समाज को बेहतर बनाने की समस्याए हैं उनका उचित उपाय तथा मानवीयता पूर्ण आचरण को प्रावधान तथा शिक्षा क्षेत्र और समाज में प्रवेश देकर एक बेहतर शिक्षा व्यवस्था तथा अखन समाज और सार्वभौम व्यवस्था स्थापित करने का मोका देगा | |KS के हेतु को ध्यान

में रखते , जो अभी की शिक्षा विधियों में तथा समाज के गर क्षेत्र में जो कमिय हमे महसूस हो रही हैं तथा उनपे जल्द ही काम करने का उपाय दुनिया धुंध रही हैं तब इस दर्शन में दी गयी सारी बाते हमे एक बेहतर पथ प्रदर्शित करती हैं तथा हमे एक सबसे पहले एक इन्सान बन्ने का सुजाव देती हैं और मानवीयता पूर्ण आचरण की स्थापना करने का मौका तथा योगदान देती हैं। मेरे इस परियोजन की मदद से में इस दर्शन के फेलावा तथा इसका अध्ययन हर एक मनुष्य कर पाए ऐसी आशा रखती हु और इस परियोजन के चलते इस दर्शन का अध्ययन पूर्ण रूप से कर पाऊ और मेरे रिपोर्ट द्वारा प्रस्तुत कर पाव यही मेरे इस परियोजन का हेतु हैं।

निष्कर्ष :

शिक्षा में पूर्णता :

चेतना विकास मूल्यविक्षा, कारीगरी (तकनीकी)शिक्षा

परंपरा में सम्पूर्णता :

मानवीय शिक्षा संस्कार

मानवीय संविधान

मानवीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था

शिक्षा निति का लक्ष्य है:

यह विकल्प अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में हैइस प्रस्ताि में मानि ही अखांि समाज ., साि शर्भौम व्यिस्था का प्रमाण देना प्रवतपाकदत हैसाथ ही मानि ही प्रमाण होने का साक्षी को भी . .सांजो वलया है इस मुद्दे पर सिशमानि का ध्यानाकषशण करना आिश्यक है हीइस क्रम मे .ं समुदाय चेतना से मानि चेतना, मानि चेतना से समाज चेतना में पररितशत होना ही महत्त्ि पूणश घटना हैऐसे . वस्थवत की सफलता मानि ही, विक्षासांस्कार- पूि शक, सिशतोमुखी समाधान सांपन्न होना ही एक मात्र उपाय हैइसे साथशक बनाने के क्रम में ही मानि व्यिहार दिशन ., मानि के सम्मुख प्रस्तुत हैइस . प्रकार समग्र विकास और जागृवत को परांपरा मेंप्रमावणत करने हेतु एक मात्र इकाई मानि है क्योंकक अवस्तत्ि में के ि ल मानि ही दृष्टा पद प्रवतष्ठा में हैभ्र्वमत मानि के द्वारा भ्र्वमत मानि के चार . ऐश्वयों रूप), बल, पद, धनका (शोषण होता हैं।

कृतज्ञता :

उन सभी सुपथ प्रदिशकों के प्रति मैं कृतज्ञ हू जिनकी वजह आज भी यथाथशता के स्त्रोत जीवित हैं . कृ तज्ञता जागृवत की ओर प्रगवत के वलए मौवलक मूल्य हैकृ तज्ञता ही मूलतः सांस्कृ वत ि सभ्यता . .का आधार एिं सांरक्षक मूल्य है जो कृ तज्ञ नहीं है, ि ह मानि सांस्कृ वत ि सभ्यता का ि ाहक बनने

का प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सकताजो मानि . सांस्कृ वत ि सभ्यता का िहन नहीं करेगा, िह विवध एिं व्यिस्था का पालन नहीं कर सकता. सांस्कृ वत, सभ्यता, विवध एिं व्यिस्था परस्पर पूरक हैंइनके वबना . समाज तथा सामावजकत-अखांि◌ा का वनधाशरण सांभि नहीं हैअस्तु ., कृ तज्ञता के वबना गौरि, गौरि के वबना सरलता, सरलता के वबना सहअवस्तत्ि-, सहअवस्तत्ि- के वबना कृ तज्ञता की वनरांतरता नहीं है. जो मानि कृ तज्ञता को िहन करता है, उसी का आचरण अवग्रम पीढ़ी के वलए विक्षाप्रद एिं प्रेरणादायी है. यह मानिीयता में ही सफल हैवजस विवध से भी चेतना विकास मूल्य विक्षा . के वलए सहज सहायता वमला हो, उन सभी के वलए कृतज्ञता है।

संदर्भः

मध्यस्थ दर्शन – अ. नागराज

शिक्षा- मध्यस्थ दर्शन सहस्तित्ववाद वान्ग्यमय से एक संकलन - २० सतम्बर २०१७

https://madhyasth-darshan.|nfo/

परिभाषा संहिता

जनवाद

हेपीनेस करिकुलम – दिल्ली

अभिभावक विद्यालय की पुस्तके